'भारत सेवाश्रम संघ', गया के 'शताब्दी–समारोह' के सुअवसर पर महामहिम राज्यपाल, श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–27.09.2016, समय–02:15 बजे अपराह्न)

'भारत सेवाश्रम संध' के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज की योग–सिद्धि के 'शताब्दी–समारोह' के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित बिहार विधान सभा में नेता–प्रतिपक्ष डॉ॰ प्रेम कुमार जी, गया लोक सभा क्षेत्र के सांसद श्री हरि माँझी जी, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ॰ नीलिमा सिन्हा जी, 'भारत सेवाश्रम संघ से जुड़े' श्री मुकेश कुमार जी, संघ के महासचिव स्वामी विश्वात्मानन्द जी, स्वामी अर्पितानन्द जी, सचिव स्वामी प्रशान्तानन्द जी, बौद्ध धर्मभिक्षु प्रो॰ डॉ॰ सत्यपाल जी एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी संन्यासीगण, भक्तगण, तीर्थ–यात्रीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों और सज्जनों!

भारत सेवाश्रम संघ के 'शताब्दी समारोह' में उपस्थित होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने गरीब, दलित एवं आर्थिक रूप से कमजोर तथा हिन्दू धर्मावलम्बियों के पितरों की मुक्ति हेतु गया जी में यह आश्रम बनवाया था। यह गर्व की बात है कि दुनिया के सबसे विकसित देश अमेरिका के शिकागो, न्यूयार्क, यूरोप के लंदन, उत्तरी अमेरिकी देशों–फिजी, गुयाना, त्रिनिनाद, कनाडा के टोरंटो, नेपाल के काठमांडू तथा बांग्लादेश के ढाका सहित कई प्रमुख स्थानों पर भारत सेवाश्रम संघ की शाखाएँ चल रही हैं। इन शाखाओं में लाखों संन्यासीगण, हिन्दूधर्म और संस्कृति के मूल सिद्धांतो का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। संघ की स्थापना का मूल उद्देश्य यही रहा है कि व्यक्ति के चरित्र–निर्माण पर जोर दिया जाय और उसमें राष्ट्र–प्रेम और सामाजिक कल्याण की भावना विकसित की जाय। यह संस्था शुरू

से ही समाज के अभिवंचित वर्ग के समग्र विकास को लेकर प्रयासरत रही है।

मोक्ष नगरी गया में स्वामी जी ने गरीब हिन्दू– समाज के लोगों को अपने पितरों की मुक्ति हेतु किये जाने वाले पूजन आदि में आवश्यक सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से भारत सेवाश्रम संघ की पहली शाखा आजादी के काफी पूर्व सन् 1924 ई॰ में ही स्थापित की थी। स्वामी जी ने संन्यासियों का संगठन बनाकर गाँव–गाँव में तब मंडलियाँ भेजी थी और सामाजिक सुधार की दिशा में कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये थे। तीर्थ स्थलों पर होने वाले आर्थिक शोषण तथा स्वार्थी तत्वों के अहितकारी कार्यों को रोकने के लिए स्वामी जी की यह पहल काफी सार्थक सिद्ध हुई थी। गया के अलावे प्रयाग, पुरी, वृंदावन, कुरूक्षेत्र, हरिद्वार, गंगासागर, रामेश्वरम आदि स्थलों पर बने भारत सेवाश्रम संघ के आश्रम आज भी तीर्थ–यात्रियों के लिए अत्यन्त आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। इन आश्रमों की यह विशेषता है कि ये धार्मिक सेवाओं के अतिरिक्त सामाजिक कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अकाल, भूकम्प, बाढ़ आदि आपदाओं के समय प्रभावित परिवारों के बीच राहत–सामग्रियों के वितरण में भी इन केन्द्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मुझे बताया गया है कि गया स्थित केन्द्र ने भी सामाजिक कल्याण के अपने कार्यक्रमों के अतिरिक्त, गरीब–दलित बच्चों को मासिक छात्रवृत्ति वितरित करने तथा उनके आवासन, भोजन एवं शिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था की है।

समाज–कल्याण एवं शैक्षणिक विकास की दिशा में आपकी संस्था के प्रयासों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि धर्म को व्यावहारिक रूप प्रदान करते हुए उसे समकालीन सामाजिक सरोकारों से जोड़ने में आपने पूरी तत्परता दिखाई है। मित्रों, दो दिनों पूर्व आपके ही मगध विश्वविद्यालय में आयोजित एक सेमिनार में अपनी बात रखते हुए मैंने कहा था कि सभी धर्मों का एक ही लक्ष्य है– मानव कल्याण। धर्म

मानव–कल्याण का लक्ष्य लेकर ही आगे बढ़ते हैं। सभी धर्मों में एक–दूसरे के प्रति सम्मान रखने की बात कही गई है। धार्मिक सहिष्णुता और सदाशयता–भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है। हमारा भारतीय संविधान, जो हमारे समस्त जीवन–दर्शनों, कार्य–पद्धतियों, आचारों–विचारों को नियमन प्रदान करने वाला मर्यादा–ग्रंथ है, उसमें भी 'धर्मनिरपेक्षता' का जो उल्लेख किया गया है, उसका निहितार्थ यही है कि भारतवर्ष सभी धर्मों के प्रति समादर का भाव रखनेवाला राष्ट्र होगा। शासन और सरकारें, यद्यपि किसी खास धर्म या संप्रदाय को बढ़ावा देने या उनके प्रचार–प्रसार को कोई प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग नहीं करेंगी, किन्तु सबको अपने–अपने धर्म के प्रति आस्था रखते हुए व्यापक मानवीय हितों के प्रति संकल्पित रहने की स्वतंत्रता होगी–ऐसा संरक्षण हमें भारतीय संविधान में प्राप्त है।

मित्रों, आपका बिहार प्रान्त तीन–तीन धर्मों–सिख, बौद्ध एवं जैन धर्म की जन्म–स्थली रहा है। बिहार प्रान्त में सभी धर्मों को समान रूप से समादर देते हुए धार्मिक सहिष्णुता को सुदृढ़ बनाया गया है तथा भारतीय संस्कृति की उदारता एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को मजबूती प्रदान की गई है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि ''ईश्वर एक है, फिर चाहे हम उसे गॉड कहें, खुदा कहें, या कुछ और कहें, सबका अर्थ एक ही है। हमें मत–भिन्नता के आधार पर एक दूसरे को नुकसान पहुँचाने की प्रवृत्ति नही रखनी चाहिए। हमारा आग्रह सत्य के प्रति दृढ़ता के साथ जुड़े रहने का होना चाहिए। मेरे ख्याल से परम सत्य के प्रति आस्था की यही प्रवृत्ति सभी धर्मों का सार तत्व है।'' भारत सेवाश्रम संघ भी इसी सिद्धांत और दर्शन को लेकर आगे बढ़ता है और लोक कल्याण से जुड़ा रहता है।

'भारत सेवाश्रम संघ' भी एक ऐसी ही संस्था है,जो सभी धर्मों के सार मानव–धर्म में विश्वास रखती है। यह संस्था मनुष्य के, और विशेष रूप से समाज के कमजोर और अभिवंचित वर्ग के कल्याण और उत्थान

के लिए सदा तत्पर रहती है। 'शताब्दी समारोह' के अवसर पर मैं संस्था के सभी धर्म–गुरूओं एवं संन्यासियों को अपना अभिवादन निवेदित करता हूँ तथा इसके अनुयायियों, भक्तों एवं सभी संबंधित लोगों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। शताब्दी–वर्ष में संस्था के उत्तरोत्तर विकास हेतु आप सभी संकल्पित हों और निरंतर देश में सामाजिक सद्भावना और राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील बने रहें, यह मेरी मंगलकामना है। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।